

दशमसा (दशन् + सप्तन्) f. N. einer Vishṇuti des Saptadāçastoma, wo die Verse eines Trika in der Ordnung 11123, 12223, 1222383 wiederholt sind, PĀNKAV. Br. 2, 7.

दशसाक्षम् (दशन् + सा०) 1) n. zehn Tausend: भूतानाम् HARIV. 13900. 185. — 2) adj. aus zehn Tausend bestehend, zehn Tausend bildend: गत्वा वर्गः MBH. 4, 280. अनीकं दशसाक्षमं इथानो वातरूक्षाम् R. 6, 73, 34. इष्टून् MBH. 1, 4100. 2, 1839.

दशसाक्षिक (wie eben) adj. aus 10,000 bestehend: भाग HARIV. 6312. दशस्तोम (दशन् + स्तोम) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 218.

दशस्य् दशस्यति 1) Dienste leisten, verehren, colere; Jmd (acc.) gefällig —, hülfreich sein: कृतारम्भिं मनुषो नि षेद्देशस्यते उशिजः शंसमायोः RV. 5, 3, 4 (vgl. 4, 6, 11, wo नमस्यतः); एत्रीभिरस्मा अर्हत्प्रिदेशस्येत् 10, 10, 9. शर्वोभिर्ना द्विवा नकं दशस्यतम् 1, 139, 5. 158, 1. 8, 20, 24. वृष्टा वं मेधो वृषणा पीपाय गोर्न मेके मनुषो दशस्यन् 1, 181, 8. 6, 50, 11. 7, 28, 4. 56, 17. 8, 16, 12. — 2) Jmd (dat.) zu Gefallen thun, gewähren: विचक्रमे पृथिवीमेष इतां तेत्राय विष्वर्मुषुषे दशस्यन् RV. 7, 100, 4. कावायाश्चृद्वातो दशस्यतः 8, 5, 23. नकिः पीरिष्मुष्यस्यते यद्वाषुषे दशस्यसि 77, 6. 1, 61, 11. 6, 26, 6. 62, 7. 8, 22, 6. अपैत्याय दशस्यन् 7, 5, 7. 8, 31, 9. — दशम् रुप, worauf दशस्य zunächst zurückzuführen wäre, ist viell. auch in दा-शस्यत्य anzunehmen; vgl. दाश्र.

— आ 1) in Ehren halten: यतो न आ नृतिथीनतः पवीर्देशस्यत् RV. 5, 50, 3. एवा नौ अग्ने विद्वा देशस्य 7, 43, 8. — 2) gewähren: कृदा नै इन्द्राय आ देशस्ये: RV. 7, 37, 3.

— सम् schenken so v. a. verzeihen: कृतं चिदेन्: सं महे देशस्य RV. 3, 7, 10.

दशस्या (von देशस्य) f. im gleichlaut. instr. Jmd (dat.) zu Gefallen: इ-रावती धेनुमतो हि भूतं सूपवस्तिनी मनुषे देशस्या RV. 7, 99, 3.

दशकूरा (देशन् + कूरा) f. Bein, der die zehn Sünden entfernen kann; nach ihr ein Festtag am 10ten Tage der 1sten Hälfte des Monats Ĝaishīha benannt As. Res. 3, 283. °स्तोत्रं Verz. d. B. H. No. 1351.

देशकूलतर् (देशन् + कूल०) m. (sc. मत्त) ein best. liturgischer Abschnitt (in welchem die 10 Opfergeräthe genannt sind, Sū. zu TAITT. ĀR. 3, 1, 1. der Anuvāka चिति: सुक् Schol. zu LĀTJ.: स एतं दशकूलारमपश्यत् TBa. 2, 2, 1. 6. 3, 12, 1. PĀNKAV. Br. 25, 4. LĀTJ. 10, 12, 10. wohl mit dem Mantra Daçhotar verbunden in der Stelle: स एतं दशकूलारं यज्ञक्रतुमपश्यद्यिदोत्रम् CĀNKB. Ça. 10, 14, 8.

देश f. 1) die am Ende eines Gewebes hervorragenden Zettelfäden; Fransen, Verbrämung eines Gewandes, pl. AK. 2, 6, 2, 15. TRIK. 3, 5, 6 (m. pl.). H. 667. an. 2, 549. MED. c. 7. वासः प्राप्तदेव वाद्गदेव वा ÇAT. Br. 3, 3, 2, 9. LĀTJ. 8, 6, 21. KĀTJ. Ça. 7, 2, 19. ĀÇV. GABH. 4, 4. अधीन वस्त्रदशानो यस्तीन्वद्वितीयो गोब्ब. 4, 9, 5. KAUC. 77, 80. कृष्णदेश LĀTJ. 8, 6, 13. KĀTJ. Ça. 22, 4, 13. ऊर्ध्वादाशः 4, 1, 17. वसनस्य देशः (sg.) M. 3, 44. द्विवा इवाम्ब-रूपस्य देशः पतति MBKKH. 76, 17. 10, 9. PĀNKAV. I, 160. VARĀH. Br. S. 72, 1. अपदेश MBH. 13, 5040. सदृश 12, 6297. देशापवित्र॑ एin mit Fransen oder dergl. versehenes Sethluch für den Soma ÇAT. Br. 4, 2, 2, 11; vgl. 1, 2, 28. AIT. Br. 7, 32. — 2) Lampendoch H. an. MED. तैलं चैपक्त्यपेत् नैमदशां च GOBH. 4, 2, 23. BHĀRT. 3, 4. KUMĀRAS. 4, 30. देशात् Ende des Lampendochts und zugleich Ende des Lebens RAGH. 12, 1. — 3) (Lebensdacht) Lebenslage,

III. Theil.

Lebensschicksal; Lebensalter; Gemüthszustand AK. 3, 4, 28, 218. H. 563.

1377. H. an. MED. देश कृतात्तोपहतेपमाविला किमत्र शक्यं पुरुषेण चेष्टितुम् R. GOBH. 2, 61, 34. 3, 75, 39. तो देशामगतो देवाम् 60. देशभिरपदायाति राजा धिक्कचला श्रियम् 6, 95, 43. प्राप्तव्यो इयं देशायेण मया 98, 30. नीर्विघ्नकृत्युपरि च देश चक्रनेमिक्रमेण MEGB. 108. देशमुविषमामु PĀNKAV. I, 381. येनालूमेतामपि देशो प्राप्तः 69, 5. तुथानिरायदत्यौ देशं यास्यति 70, 5. आत्मदेशात्तरेषु ÇAT. 77. HIT. I, 201. देशाविशेषे शास्ति: करणीया 36, 5. येनावपेभवति शापदेशायापात्तिः KATHAS. 7, 143. प्रशास्ता सा देश मम 23, 279. BHĀG. P. 1, 8, 31. यौवनं HIT. 10, 19. दारक्रियायोग्यदेशं च पुत्रम् RAGH. 5, 40. देशाते शोषितं वृहम् HARIV. 4394. देशात्मपैयिवान् RAGH. 12, 1. ग्रवणादर्शनादापि मिथ्यः संद्रव्यागयोः। देशाविशेषो यौ इप्राप्तो पूर्वरागः स उच्यते || Sū. D. 77, 17. कामदेशः 21. In der Astrol. das von den Sternen abhängige Schicksal eines Menschen und die ein solches Schicksal hervorrufende Stellung der Sterne VARĀH. Br. S. 69, 6. LANGUĀ. 7, 1. fgg. 9, 25. BĀH. 8, 1. fgg. 11, 19. 12, 19. °पाक् Br. S. 94, 62. °पात् 68, 26. Br. 8, 19. °विभाग 27, 1. — Verz. d. B. H. No. 868. 874. 878. 881. Vgl. अतर्देशा. — 4) der Geist (चेतस्) AČĀJAP. im ÇKDR.

देशांश (देशन् + अंश) m. sg. wohl zehn Theile, das Zehnsache Verz. d. Oxf. H. 103, a, N. 1.

देशाकर्ष (देश Docht + आकर्ष oder कर्ष) m. Lampe H. 687. °कर्षिन् m. dass. HIT. 24.

देशात् (देशन् + अत) adj. zehnäugig; m. Bez. eines best. Zauberisches gegen Geister, welche in Waffen hausen, R. 1, 30, 5 (GOBH. 31, 6).

देशात्तर (देशन् + अतर) adj. zehnsilbig: वरुणो देशात्तरेण विराजमुद्दयत् VS. 9, 33. ÇAT. Br. 1, 1, 4, 22. 3, 3, 2, 17. 10, 3, 4, 8.

देशाङ्कुल (देशन् + अङ्कुल) 1) adj. zehn Finger lang: शङ्कु M. 8, 271. — 2) n. Wassermelone BHĀVAP. im ÇKDR. NIGH. PA.

देशाद्यशिन् s. u. देशाद्यशिन्.

देशाधिपति (देशन् + अधिपति) m. ein Befehlshaber über zehn Mann MBH. 12, 3712.

देशानन (देशन् + आनन) adj. zehngesichtig; m. Bein, Rāvāpa's ÇABDA. im ÇKDR. R. 3, 39, 8. 43, 6. 6, 5, 21. RAGH. 10, 76.

देशानिक m. = दत्ती Croton polyandrum Roxb. oder Croton Tiglum Lin. ÇABDA. im ÇKDR.

देशानुगान (देशन् + अनुन्) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 218. दिशी ब्रतं देशानुगानम् 219.

देशामय m. Bein. Çiva's H. c. 43. — Entweder von देशा oder देशन् + आमय.

देशात्रिः s. u. देशात्रिः.

देशारुका (देश 1. + रुका oder आरुका) f. eine best. Pflanze, = कैवर्तिका RĀGAN. im ÇKDR. Das eben angeführte Synonym, welches auf कैवर्त Fischer zurückgeht, könnte eine Form दाशरुका vermutlich lassen; aber ein anderes Synonym वस्त्ररङ्गा bestätigt die Richtigkeit der anderen Form: die Pflanze ist so benannt, weil sie an Kleider sich hestet.

देशार्णा gāna विमुक्तादि zu P. 5, 2, 61. 1) m. pl. N. pr. eines Volkes im Südosten von Madhjadeça VARĀH. Br. S. 5, 40. 10, 15. 14, 10. 16, 26. 31, 11. MBH. 1, 4449. 2, 1063. 1189. 4, 12. 144. 6, 348. 350. 362 (VP. 186.

35*